ज़कात के लिए आसान मार्गदर्शन (2 का भाग 1)

रेटिंग:

विवरण: ?? ?? ??????? ?? ?????? ?? ???? ??????? ??? ?? ??, ????? ?? ???? ??? ????? ?????? ??, ?? ???? ????? ?? ???? ???? ?? ??? ?????????? ?? ???? ????

श्रेणी: पाठ › पूजा के कार्य › ज़कात

द्वारा: Imam Mufti (© 2012 NewMuslims.com)

प्रकाशित हुआ: 08 Nov 2022

अंतिम बार संशोधित: 07 Nov 2022

उद्देश्य:

- ज़कात का अर्थ और महत्व जानना।
- ज़कात की यथार्थ परिभाषा जानना।
- जानना कि निसाब क्या है।
- यह जानना कि ज़कात कब दी जाती है और किसको दी जाती है।

अरबी शब्द

- *?????* - अनिवार्य दान।
- *?????* - स्वैच्छिक दान।
- *??????* - आस्था की गवाही
- *??* - मक्का की तीर्थयात्रा, जहां तीर्थयात्री कुछ अनुष्ठानों की एक श्रृंखला का पालन करते हैं। हज इस्लाम के पांच स्तंभों में से एक है, जिसे हर वयस्क मुसलमान को अपने जीवन में कम से कम एक बार अवश्य करना चाहिए यदि वे इसे वहन कर सकते हैं और शारीरिक रूप से सक्षम हैं।
- *?????* - इस्लामी चंद्र कैलेंडर का नौवां महीना। यह वह महीना है जिसमें अनिवार्य उपवास निर्धारित किया गया है।
- *?????* - इस्लामी कानून।

·????? - ज़कात अनविार्य होने के लिए एक व्यक्ति के पास न्यूनतम धन राशि।

इस्लाम में पूजा के पांच सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक कार्यो को "इस्लाम के स्तंभ" के रूप में जाना जाता है। ये हैं "शहदाह" (गवाही कि अल्लाह के अलावा कोई भी पूजा के लायक नहीं है और मुहम्मद अल्लाह के दूत हैं), पांच दैनिक प्रार्थनाएं, ज़कात, उपवास और हज यात्रा। इस्लाम के अन्य पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने से पहले एक मुसलमान को इन स्तंभों को सीखने और इसका पालन करने पर सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण ध्यान देना होगा।

शब्द 'ज़कात' का अनुवाद आमतौर पर 'गरीब को देने वाला' या 'भिक्षा कर' के रूप में किया जाता है। दरअसल, कोई भी एक शब्द ज़कात का ठीक से अनुवाद नहीं कर सकता।

ज़कात शब्द की व्याख्या करने से पहले, इसे दूसरे शब्द "सदक़ा" से सबसे अच्छी तरह से समझा जाता है।

ज़कात और सदक़ा अलग हैं। ज़कात अनिवार्य दान है और इसकी आवश्यकता है, जबकि सदाका स्वैच्छिक दान है और एक अनुशंसित कार्य है जो अतिरिक्त पुरस्कार वाला है। इसके अलावा, ज़कात इस्लाम का तीसरा स्तंभ है। लापरवाही से ज़कात का भुगतान नहीं करना पाप है, जबकि आमतौर पर स्वैच्छिक दान नहीं करने पर कोई पाप नही होता है। इसलिए इसे "स्वैच्छिक" दान कहा जाता है! ज़कात की गणना सटीक रूप से की जाती है और केवल विशिष्ट लोगो को ही दी जा सकती है, जबकि सदक़ा ऐसे नियमों से बाध्य नहीं है। ज़कात सालाना देना पड़ता है, जबकि सदक़ा केवल एक बार या जितनी बार चाहें उतनी बार दे सकते हैं।

ज़कात की आध्यात्मिकता

ज़कात पूजा का एक सुंदर कार्य है जो शुद्धिकरण से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। वास्तव में, ज़कात में अपना धन खर्च करने से भौतिक धन के प्यार से दिल शुद्ध हो जाता है। व्यक्ति जो अपने धन का दान देता है, इस सच्चाई की पुष्टि करता है कि उसे अल्लाह के प्यार से ज्यादा प्रिय कुछ नहीं है और वह अल्लाह को खुश करने के लिए अपने धन का भी बलिदान करने के लिए तैयार है। पैगंबर मुहम्मद ने कहा,

‘जो कोई अपने धन पर ज़कात देगा, उस पर से उसकी बुराई दूर की जाएगी।’[1]

ज़कात की यथार्थ परिभाषा

इस्लामी कानून (शरिया) में, शब्दों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है। और ज़कात के लिए भी ऐसा ही है। शरिया मे किसी के धन का विशिष्ट भाग ज़कात बताया गया है जिसे क़ुरआन में वर्णित लोगों के एक विशिष्ट समूह को वार्षिक रूप से दिया जाता है।

ज़कात का महत्व और इसका भुगतान न करने की सजा

ज़कात गरीबों और जरूरतमंदों के प्रति इस्लाम की करुणा का प्रतिनिधित्व करती है। ज़कात कर नहीं है, बल्कि यह एक पूजा है जिसके लिए अल्लाह से इनाम मिलता है। ज़कात न देना पाप है। अपने दायित्व को नकारना अविश्वास का कार्य है।

क़ुरआन हमें उन लोगों के भाग्य के बारे में बताता है जो ज़कात देने से इनकार करते हैं। क़ुरआन कहता है,

“...तथा जो सोना-चांदी एकत्र करके रखते हैं और उसे अल्लाह की राह में दान नहीं करते, उन्हें दुखदायी यातना की शुभ सूचना सुना दें। जिस (प्रलय के) दिन उसे नर्क की अग्नि में तपाया जायेगा, फिर उससे उनके माथों, पार्श्वों (पहलू) और पीठों को दागा जायेगा (और कहा जायेगा) यही है, जिसे तुम एकत्र कर रहे थे, तो (अब) अपने संचित किये धनों का स्वाद चखो।’” (क़ुरआन 9:34-35)

निसाब क्या है?

ज़कात तब तक अनिवार्य नहीं होता जब तक कि धन एक न्यूनतम स्तर तक न पहुंच जाए जिसे "निसाब" कहते हैं। निसाब एक पैमाना है जो आपको यह निर्धारित करने में मदद करता है कि आप पर ज़कात अनिवार्य है या नहीं। धन के विभिन्न रूपों में अलग-अलग निसाब होते हैं:

चांदी 595 ग्राम

सोना 85 ग्राम, 3 यूएस औंस, या 2.74 ट्रॉय औंस शुद्ध सोना

नकद और बचत 85 ग्राम सोने या 595 ग्राम चांदी के मूल्य के बराबर, जो भी कम हो।

उपरोक्त वस्तुओं पर ज़कात उनके मूल्य का 2.5% है। यदि निसाब धन के किसी एक रूप मे है, तो ज़कात केवल उस विशेष प्रकार के धन पर लागू होती है और उसकी गणना उसके कुल (निसाब और

उससे अधिक) पर होती है।

अंतरराष्ट्रीय बाजारों में सोने और चांदी की कीमतें हर रोज बदलती रहती हैं। उदाहरण के लिए, 15 अगस्त 2012 को सोने की कीमत लगभग 51.54 डॉलर प्रतिग्राम थी और चांदी की कीमत 0.89 डॉलर प्रतिग्राम थी, इसलिए सोने के लिए निसाब लगभग 4380.9 डॉलर (51.54 x 85 ग्राम) और चांदी के लिए निसाब लगभग 529.55 डॉलर ($0.89 x 595 ग्राम)। सोने और चांदी की कीमतें www.goldprice.org यहां से देख सकते हैं।

ज़कात कब देय होती है?

कई इस्लामी नियम और कानून इस्लामी चंद्र वर्ष पर निर्भर करते हैं। ज़कात उनमें से एक है। अगर आपके पास एक चंद्र वर्ष के लिए निसाब से ज्यादा दौलत है, तो आपको ज़कात देना है। अधिकांश लोग अपने ज़कात की गणना रमज़ान से रमज़ान तक करते हैं, हालांकि इसकी आवश्यकता नही है। आप हर रमज़ान की 1 या 15 तारीख को अपनी ज़कात की गणना और इसका भुगतान करने का नियम अपने लिए बना सकते हैं।

उदाहरण: मान लें कि आपके पास एक चंद्र वर्ष के लिए $2000/- और 800 ग्राम सोना है। आपकी ज़कात की गणना $50 और 800 ग्राम का 2.5% है, जो कि 20 ग्राम या इसके बराबर नकद है।

ज़कात देना किसके लिए अनिवार्य है?

ज़कात देना हर उस मुसलमान के लिए ज़रूरी है जो वयस्क या नाबालिग, पुरुष या महिला, समझदार या पागल है। कानूनी अभिभावकों को उन लोगों की ओर से ज़कात देनी होगा जो खुद ज़कात नहीं दे सकते। यह विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है जिनके पास स्वयं का धन है या उनके लिए एक ट्रस्ट बनाया गया है और उन खातों में जमा धन निसाब तक पहुंचता है।

ज़कात माल, पशुधन और अनाज, फलों और सब्जियों जैसे कृषि उत्पादों पर भी देय है। एक व्यापारी या किसान को अपने से संबंधित ज़कात के नियमों के बारे में जानना ज़रूरी है, लेकिन अभी के लिए हम इन पाठों में इसकी चर्चा नहीं करेंगे।

बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली चीजों पर कोई ज़कात नहीं है। बुनियादी आवश्यकताएं हैं भोजन, आश्रय, कपड़े, घरेलू सामान, बर्तन, फर्नीचर आदि।

फुटनोट:

[1] ???? ?????? ?? ??????

इस लेख का वेब पता

https://www.newmuslims.com/hi/articles/164

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।